संस्मरण

आधी बोरी आलू

❑ ऊषा शर्मा

भारतीय समाज में बालिका-शिक्षा एक अहर्निशि चुनौती है । बालिका की विशिष्ट सामाजिक स्थिति को समझे और उनके प्रति संवेदनशील हुए वगैर इस चुनौती से पार पाना संभव नहीं है । लेकिन पितृसत्तात्मक समाज में बालिका को पक्षपात और हीनदृष्टि विरासत में मिलती है । यह संस्मरण उत्तर-भारत में इस जड़ विरासत के अस्तित्व का प्रमाण देता है ।

मुझे आज भी याद है कि मैं विद्यालय से अपरिचित एक भोली-भाली साधारण ग्रामीण बालिका थी । मुझे यह मालूम नहीं था कि पढ़ना-लिखना या विद्यालय क्या होता है । गांव के गुण्डागर्दी भरे वातावरण के कारण घर वालों ने कभी स्कूल के विषय में बताया ही नहीं और इस माहौल के कारण वहां बालिकाओं को शिक्षा एवं शिक्षण कार्यों से अलग ही रखा जाता था । उस समय मैं इस गुण्डागर्दी का अभिप्राय नहीं समझती थी । उम्र भी छोटी थी, करीब सात साल ।

एक दिन की बात है, मैं दादाजी के साथ एक विद्यालय के समीप से गुजरी कि अचानक कुछ बच्चों को पढ़ाई करते देखकर मेरे मन में यह जानने की इच्छा हुई कि ये क्या कर रहे हैं ? मैंने दादाजी से पूछा, उन्होंने कहा कि ये सब पढ़ाई कर रहे हैं । बस उस दिन से मेरे मन में एक ही विचार घुमड़ने लगा कि मैं भी पढ़ूंगी। ये तो कोई मजेदार काम है । कितने सारे बच्चों के साथ मिलकर खेलूंगी । बस उस दिन के बाद से मैं पिताजी से जिद करने लगी कि मैं भी स्कूल जाऊंगी । पिताजी मुझे स्कूल तो भेजना चाहते थे पर गांव में स्कूल नहीं होने के कारण कोई निर्णय नहीं कर पा रहे थे कि बेटी को स्कूल भेजें या नहीं । स्कूल गांव से तीन-चार किलोमीटर दूर किसी दूसरे गांव में था । इन गांवों में गुण्डागर्दी प्रबल थी । प्रतिदिन कोई न कोई घटना घटित होती थी। ये घटनाएं लड़कियों के साथ ही घटित होती ।

इन्हीं परिस्थितियों के कारण मुझे स्कूल नहीं भेजा गया । मैंने अपनी प्राथमिक शिक्षा घर में ही आरंभ की । जब मैं दो साल तक घर में पढ़ चुकी थी तो गांव में पुलिस चौकी पर एक ऐसे दरोगा आए जिन्होंने गुण्डागर्दी को समाप्त किया । इससे गांव के परिवेश में कुछ सुधार हुआ । और पिताजी ने अचानक एक दिन कहा कि तुम कल से स्कूल जाओगी । ये सुनकर मुझे ऐसा लगा कि दो-तीन साल पहले जैसे मेरा कुछ गुम हो गया था वह आज अचानक प्राप्त हुआ । मेरे मन में ऐसी अनुभूति हुई कि जैसे किसी परिन्दे के पर निकल आए हों । यह कल्पना करने लगी कि मैं भी अब परिन्दे की भांति आकाश में उड़ान भरूंगी। मैं भी अब स्कूल पढ़ने जाऊंगी । बस पूरे गांव में मैंने हल्ला कर दिया कि मैं भी अब पढ़ने जाऊंगी । मन में अनेकों प्रश्न थे-स्कूल कैसा होगा ? वहां पढ़ाने वाले शिक्षक कैसे होंगे ? वहां का वातावरण कैसा होगा ? पीने के पानी की व्यवस्था होगी या नहीं ? इस प्रकार चिन्तन करते हुए पता नहीं कब रात हो गयी ।

मैं दूसरे दिन प्रात: काल जल्दी उठी । अपने दैनिक कार्य समाप्त करके पिताजी के साथ स्कूल जाने लगी । स्कूल जैसे-जैसे नजदीक आ रहा था, मेरी अजीब सी स्थिति हो रही थी। कुछ उत्साह और कुछ भय भी था । अपना पूर्ण साहस बटोर कर जब मैं स्कूल पहुंची, उस समय शिक्षक किसी बच्चे की पिटाई कर रहे थे । उसी समय मैंने पिताजी से कहा ''पिताजी मुझे वापस घर ले चलो।'' उन्होंने पूछा-''क्यों ?'' मैंने कहा ''ज्यां मास्साब बच्चन्ने मारतें? मैं तो यहां नई पड़ूंगी ।'' पिताजी के बहुत कुछ समझाने के बाद मैं उस दिन स्कूल में रुक सकी । पहले ही दिन मेरी कई बच्चों से मित्रता हो गई । उन्होंने मुझे सभी शिक्षकों के स्वभाव व व्यवहार के बारे में बता दिया ।

एक दिन कक्षा में अध्यापक गणित पढ़ा रहे थे । सभी बच्चे अपनी-अपनी स्लेट पर सवाल कर रहे थे, मैं चुपचाप बैठी थी । अध्यापक ने मेरे पास आकर पूछा ''तुम क्यों नहीं कर रही हो ?'' मैंने बहुत डरते हुए उत्तर दिया। ''मेरी स्लेट किसी ने चुरा ली है ।'' उसके बाद अध्यापक ने सभी बच्चों से कहा कि स्लेट जिस किसी के पास हो, हमारी टेबुल के सामने आ जायेगा तो उसकी सजा कम कर दी जायेगी । यह सुनकर एक बच्चा हाथ में स्लेट लेकर अध्यापक को देते हुए बोला ''जी मैंने अपनी जानी जासू अपये बस्ता में धल्लई ।'' ये सुन अध्यापक ने उस बच्चे की वो पिटाई की कि बच्चा बेहोश हो गया । ये देखकर मेरा मन अध्यापक के प्रति गुस्से और नफरत से भर गया ।

प्रतिदिन कुछ शिक्षक एक पेड़ के नीचे टेबल-कुर्सियां डालकर पूरे समय तक बातें करते रहते । बच्चे आपस में हो हल्ला करते, बार-बार एक-दूसरे की शिकायत करते जाते और शिक्षक कोई ध्यान न देकर कहता 'जाओ कक्षा में जाकर बैठकर पढ़ो', बच्चे फिर आपस में शोर करने में व्यस्त हो जाते । एक बार हमारे कक्षा अध्यापक नहीं थे । यह जानकर कि आज मास्साब तो आए नहीं है; मैं और मेरी एक मित्र गुट्टे से खेलने लग गये । इतने में कक्षा पांच के अध्यापक हमारी कक्षा में घुसे और हमारे ही सामने आकर खड़े हो गये । बच्चों को पीटने में उनकी अलग पहचान थी । बच्चों का उनको देखते ही डर के मारे पेशाब निकल जाता था । जब हमने उनको अपने सामने खड़ा देखा तो हम एक बुत की भांति हो गये । जब अध्यापक ने अपनी ऐनक के पीछे से छोटी-छोटी आंखे घुमाते हुए प्रश्न किया - ''ये क्या हो रहा है ?'' हमसे कोई उत्तर देते नहीं बना। फिर अध्यापक ने पूरी शक्ति से हम दोनों के सिरों को एक दूसरे के सिर से जोर से भिड़ा दिया । ऐसा प्रतीत हुआ मानो सिर फूट गया हो । साथ ही मेरा पेशाब भी निकल कर टांगों से फर्श पर फैल गया । अध्यापक कक्षा से बाहर चले गये और मैं जोर-जोर से रोने लगी । उस समय ऐसा लगा कि मैं स्कूल क्यों आई ? घर पर रहकर ही पढ़ती रहती । मुझे स्कूल आने पर दु:ख होने लगा ।

मुझे कुछ ऐसे काम करने का शौक था जैसे-'पेड़ पर चढ़ना' 'नहर में नहाना', 'मछली पकड़ना' आदि । मेरे विद्यालय के पास एक तालाब था । नहर भी वहां से होकर जाती थी । पेड़-पौधे भी अधिक थे । एक बार पांचवी कक्षा की बात है । कुछ छोटे बच्चों को साथ लेकर मैं आधे दिन की छुट्टी में एक आम के बाग में गई और पेड़ों पर चढ़कर केरियां तोड़ने लगी । स्कूल पास था । माली ने अध्यापक से जाकर शिकायत कर दी । अध्यापक उसी समय डंडा लेकर वहां आए और जिस पेड़ पर मैं चढ़ी हुई थी, उस पेड़ की जड़ में डंडा मारकर कहा 'पेड़ से नीचे आओ ।' अध्यापक की आवाज सुनकर मेरे शरीर में ऐसी कंपन हुई कि मैं अपना संतुलन खो बैठी और पेड़ से नीचे गिर गई । मेरे एक हाथ की हड्डी टूट गयी। मैं काफी दिनों तक स्कूल नहीं जा सकी । आज भी मेरे उस हाथ में बेण्ड है । उस दिन तो मैंने यह निर्णय कर लिया कि आज के बाद स्कूल जाना ही नहीं ।

उसके बाद मैं इतनी भयभीत हो गई थी कि कई महीनों तक स्कूल नहीं गई । काफी समय व्यतीत होने पर घर वालों ने मुझे बहुत समझाया, तब मैं स्कूल गई ।

परीक्षा शुरु होने वाली थी । कालू नाई का लड़का स्कूल नहीं आ रहा था । शिक्षक ने यह पता लगाने के लिए कि क्या कारण है जिससे मनिया स्कूल नहीं आ रहा, कुछ बच्चों को उसके घर पर भेजा । बच्चों ने जाकर अध्यापक को बताया-''मनिया तो अपनी बकरियों को खेत में चराने ले जाता है । इसलिए स्कूल नहीं आता।'' उसके बाद शिक्षक ने बच्चों से कहलवाया कि उससे जाकर कह दो कि यदि वह स्कूल नहीं आया तो उसका नाम काट दिया जायेगा ।

मनिए का पिता एक दिन स्कूल आया और हाथ जोड़कर बोला -'मास्साव मेरे बेटे का नाम स्कूल से मत काटिये । यदि अभी आपने स्कूल से इसका नाम काट दिया तो मैं दुबारा स्कूल में इसका नाम नहीं लिखवा सकूंगा । मेरा छोरा पढ़ नहीं पायेगा ।' शिक्षक ने उस गरीब कालू की बात सुनकर कहा-'ठीक है तुम आधी बोरी आलू मेरे घर भिजवा देना, मनिया का नाम नहीं कटेगा। और यह पास भी हो जाएगा।' कालू हां में अपना उत्तर देकर चला गया। मगर मैं वहां ये सब सुन रही थी और मुझे यह सब अच्छा नहीं लगा । घर पर आकर सोचती रही कि शिक्षक नाम नहीं काटने या पास करने के बदले आलू क्यों लेते हैं ? ◆